B. A (Hons) Part III
Philosophy - Paper VI
Topic - Doctrine of Trusteeship
Dr. Sachidanand Prasad.
R.R.S. College, Mokama.

(1)

महात्मा गाँधी की आर्थिक विचारधारा उनके दार्शनिक और नैतिक विचारों पर आधारित है। महात्मा गाँधी का कहना है कि समष्टि के हित में व्यक्ति का हित निहित है। फिर उनका यह भी कहना था कि मनुष्य और मशीन में मनुष्य का महत्व अधिक है क्योंकि मशीन मनुष्य के कल्याण का एक साधन है। गाँधीजी के अनुसार आजीविका के लिए कुछ न कुछ शारीरिक श्रम आवश्यक है। मजदूर, किसान अथवा कारीगर का जीवन श्रेष्ठ मानते हुए शारीरिक श्रम को उन्होंने सर्वोत्कृष्ट माना है। इसके अलावे उन्होंने बौद्धिक श्रम को भी काफी महत्व दिया है और कहा है कि शारीरिक श्रम से शरीर की सुदृढ़ता मिटती है और बौद्धिक श्रम से मन की इसलिए अपने अपने क्षेत्र में प्रत्येक मूल्यवान है। गाँधीजी का कहना है कि उत्पादन प्रणाली मनुष्य के कल्याण के लिए होना चाहिए। वैसी उत्पादन प्रणाली जिसमें धनता का शोषण हो और सम्पत्ति कुछ व्यक्तियों के हाथ में हो, यह सही नहीं है। वितरण के संबंध में उनका विचार है कि प्रत्येक व्यक्ति को उतना ही संग्रह तथा व्यय करना चाहिए जितना उसकी तत्काल आवश्यकता हो इसलिए उन्होंने अस्तेय और अपरिग्रह जैसे सद्गुणों को मानव के लिए आवश्यक माना है।

उपभोग के संबंध में महात्मा गाँधी का विचार उनके नैतिक और धार्मिक विचारों पर आधारित है। उनका कहना है कि वस्तुओं के उपभोग के विषय में मनुष्य को संयमी होना चाहिए जिसे गाँधीजी ने "संयम-सिद्धान्त" कहा है। गाँधीजी का संरक्षता का सिद्धान्त अत्यंत ही महत्वपूर्ण सिद्धान्त है। पूँजीवादी व्यवस्था की विशेषता है कि यह निजी सम्पत्ति पर स्वामित्व का अधिकार मानती है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता के अनुसार व्यक्तिगत सम्पत्ति का निर्माण कर सकता है और वह सम्पत्ति उसके बाद उसके उत्तराधिकारी को प्राप्त होती है। समाजवाद पूँजीवाद का विरोधी सिद्धान्त है। यह व्यक्तिगत सम्पत्ति की समाप्ति तथा उत्पादन के साधनों के सामाजिक स्वामित्व की स्थापना का समर्थन करता है। महात्मा गाँधी का सम्पत्ति-संबंधी विचार उपरोक्त इन दोनों से भिन्न है। गाँधीजी पूँजीपति तथा श्रमिकों को एक सिक्के का विरोधी नहीं मानते थे बल्कि उनका कहना था कि दोनों एक सिक्के के दो पक्ष हैं, क्योंकि पूँजीपति बिना श्रमिकों की सहायता के सम्पत्ति अर्जित नहीं कर सकता है और न श्रमिक बिना पूँजीपति के काम चला सकता है इसलिए वे परस्पर एक सिक्के पर निर्भर हैं।

गाँधीजी समाज की विषमताओं को अहिंसा और प्रेम के माध्यम से दूर करना चाहते थे। अपने प्रमुख सिद्धान्त Trusteeship में उनकी मान्यता है कि अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेने के बाद जो धन बचता है उसका धनी व्यक्ति को समाज की ओर से संरक्षक (Trustee) बन जाना चाहिए। सम्पत्ति तथा धन के संबंध में यह विचार इस मान्यता पर आधारित है कि सारी सम्पत्ति ईश्वर की है, इसलिए निजी सम्पत्ति का कोई अर्थ नहीं है और उसके मनमाने उपयोग करने की छूट किसी व्यक्ति को नहीं दी जा सकती है। इसलिए अपनी आवश्यकानुसार खर्च कर लेने के बाद बचा हुआ धन समाज के हित में खर्च करना चाहिए। अतः इस सिद्धान्त के अनुसार कोई व्यक्ति सम्पत्ति का स्वामी न होकर संरक्षक है। गाँधीजी ने अपने सिद्धान्त में साधन को महत्वपूर्ण माना है। अपने साधन सिद्धान्त में उन्होंने बतलाया है कि शरीर भोगप्राप्ति के लिए नहीं बल्कि सेवा के लिए प्राप्त हुआ है इसलिए आवश्यकता को सीमित किया जाना चाहिए। गाँधीजी के अनुसार संयमी जीवन व्यतीत करते हुए यदि कोई धन कमाये और उसे अपनी आवश्यकता पूर्ति करके जो बचे वह उसका संरक्षक बन जाये तो समाज से विषमता दूर हो जायेगी। समुचित आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद जो धन बचेगा वह समाज कल्याण के लिए खर्च होगा।